## संगीत- गायन में स्नातक(बी0ए0)

***उद्देश्य*** *- इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संगीत का प्रारम्भिक ज्ञान(सैद्धांतिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष) देकर उनमें शास्त्रीय संगीत के ज्ञान की नींव डालना है।*

### प्रथम सेमेस्टर कोर कोर्स का पाठ्यक्रम

| क्र0 सं0 | कोर्स शीर्षक | कोर्स कोड | अंक | श्रेयांक |
|---|---|---|---|---|
| **1.** | **भारतीय संगीत का परिचय I- गायन एवं प्रयोगात्मक** | **BAMV(N)-101** | **100** | **4** |
| **प्रथम खण्ड** | **भारतीय संगीत का परिचय I- गायन** | | **50** | **2** |
| | **इकाई 1-** भारतीय संगीत की अवधारणा। | | | |
| | **इकाई 2-** परिभाषा ( श्रुति, स्वर, सप्तक, वर्ण, अलंकार**,** राग, आलाप, लय, लयकारी, मात्रा, ताल, ठेका, आवर्तन**,** सम**,** ताली, खाली व विभाग)। | | | |
| | **इकाई 3-** ख्याल की उत्पत्ति, विकास एवं घरानों का संक्षिप्त परिचय| | | |
| | **इकाई 4-** संगीतज्ञों का जीवन परिचय ( पं**0** वी**0**एन**0** भातखण्डे, पं**0** वी**0** डी**0** पलुस्कर व सदारंग-अदारंग) । | | | |
| | **इकाई 5-** भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति का परिचय, राग यमन परिचय एवं ख्याल(विलम्बित व मध्यलय ) बन्दिशों को लिपिबद्ध करना, राग बिलावल का परिचय एवं मध्यलय ख्याल को लिपिबद्ध करना**;** पाठयक्रम के रागों में ध्रुवपद दुगुन लयकारी सहित। | | | |
| | **इकाई 6-** भातखण्डे तालिपि पद्धति का परिचय **;** पाठयक्रम की तालों **तीनताल एवं चारताल** के ठेके एवं उनको दुगुन एवं चौगुन लयकारी सहित लिपिबद्ध करना। | | | |
| **द्वितीय खंड** | **प्रयोगात्मक** | | **50** | **2** |
| | **इकाई 7-** राग यमन का परिचय एवं स्वर विस्तार। | | | |
| | **इकाई 8-** राग यमन में विलम्बित ख्याल आलाप एवं तानों सहित । | | | |
| | **इकाई 9-** राग यमन में मध्यलय ख्याल आलाप एवं तानों सहित । | | | |
| | **इकाई 10-** राग बिलावल का परिचय एवं स्वर विस्तार। | | | |
| | **इकाई 11-** राग बिलावल में मध्यलय ख्याल आलाप एवं तानों सहित । | | | |
| | **इकाई 12-** पाठ्यक्रम के रागों यमन एवं बिलावल में से किसी एक में ध्रुवपद दुगुन लयकारी सहित। | | | |
| | **इकाई 13-** पाठ्यक्रम के तालों तीनताल एवं चारताल की पढन्त एवं उनके ठेकों को दुगुन एवं चौगुन लयकारी में पढ़ना। । | | | |
| | **इकाई 14-** पाठ्यक्रम सम्बन्धित मौखिक परीक्षा। | | | |

**राग – यमन एवं बिलावल** **ताल – तीनताल एवं चारताल**